Pro

Chapter 4

Hindi Interlinear

Reference: Hindi Easy-to-Read Version

1 שִׁמְעוּ בָנִים מוּסַר אָב וְהַקְשִׁיבוּ לָדַעַת בִּינָה׃
सुनो पुत्रो शिक्षा पिता-की और-ध्यान-दो जानने-के-लिए समझ
H8085 H4148 H0001 H7181 H3045 H0998

हे मेरे पुत्रों, एक पिता की शिक्षा को सुनों उस पर ध्यान दो और तुम समझ बूझ पा लो!

2 כִּי לֶקַח טוֹב נָתַתִּי לָכֶם תּוֹרָתִי אַל־תַּעֲזֹבוּ׃
क्योंकि सीख अच्छी दिया-है-मैंने तुम्हें व्यवस्था-मेरी मत- छोड़ो
H3948 H2896 H5414 H8451 H0408

मैं तुम्हें गहन—गम्भीर ज्ञान देता हूँ। मेरी इस शिक्षा का त्याग तुम मत करना।

3 כִּי־בֵן הָיִיתִי לְאָבִי רַךְ וְיָחִיד לִפְנֵי אִמִּי׃
पुत्र था-मैं पिता-अपने-के-लिए कोमल और-इकलौता सामने माता-अपनी-के क्योंकि-
H1121 H1961 H0001 H7390 H3173 H6440 H0517

जब मैं अपने पिता के घर एक बालक था और माता का अति कोमल एक मात्र शिशु था,

4 וַיֹּרֵנִי וַיֹּאמֶר לִי יִתְמָךְ־דְּבָרַי לִבֶּךָ שְׁמֹר מִצְוֹתַי וֶחְיֵה׃
और-सिखाया-मुझे और-कहा मुझसे थाम-ले- वचन-मेरे हृदय-तेरा रक्षा-कर आज्ञाएँ-मेरी और-जी
H3384 H0559 H8551 H1697 H3824 H8104 H4687 H2421

मुझे सिखाते हुये उसने कहा था—मेरे वचन अपने पूर्ण मन से थामे रह। मेरे आदेश पाल तो तू जीवन रहेगा।

5 קְנֵה חָכְמָה קְנֵה בִינָה אַל־תִּשְׁכַּח וְאַל־תֵּט מֵאִמְרֵי־פִי׃
मोल-ले बुद्धि मोल-ले समझ मत- भूल और-मत- मुड़ वचनों-से- मुख-मेरे-के
H7069 H2451 H7069 H0998 H0408 H7911 H0408 H5186 H0561 H6310

तू बुद्धि प्राप्त कर और समझ बूझ प्राप्त कर! मेरे वचन मत भूल और उनसे मत डिग।

6 אַל־תַּעַזְבֶהָ וְתִשְׁמְרֶךָּ אֱהָבֶהָ וְתִצְּרֶךָּ׃
मत- छोड़-उसे और-रक्षा-करेगी-तुझे प्रेम-कर-उसे और-पहरा-देगी-तुझे
H0408 H5800 H8104 H0157 H5341

बुद्धि मत त्याग वह तेरी रक्षा करेगी, उससे प्रेम कर वह तेरा ध्यान रखेगी।

7 רֵאשִׁית חָכְמָה קְנֵה חָכְמָה וּבְכָל־קִנְיָנְךָ קְנֵה בִינָה׃
आरम्भ बुद्धि-का मोल-ले बुद्धि और-सब- सम्पत्ति-अपनी-से मोल-ले समझ
H7225 H2451 H7069 H2451 H3605 H7075 H7069 H0998

“बुद्धि का आरम्भ ये है: तू बुद्धि प्राप्त कर, चाहे सब कुछ दे कर भी तू उसे प्राप्त कर! तू समझबूझ प्राप्त कर।

8 סַלְסְלֶהָּ וְתָרוֹמְמֶךָּ תְּכַבְּדֶךָּ כִּי תְחַבְּקֶנָּה׃
ऊँचा-कर-उसे और-ऊंचा-करेगी-तुझे सम्मानित-करेगी-तुझे जब गले-लगा-उसे
H5549 H7311 H3513 H3588 H2263

तू उसे महत्व दे, वह तुझे ऊँचा उठायेगी, उसे तू गले लगा ले वह तेरा मान बढ़ायेगी।

9 תִּתֶּן לְרֹאשְׁךָ לִוְיַת־חֵן עֲטֶרֶת תִּפְאֶרֶת תְּמַגְּנֶךָּ׃
देगी सिर-तेरे-को माला- अनुग्रह-की मुकुट सौंदर्य-की पहनाएगी-तुझे
H5414 H7218 H3880 H2580 H5850 H8597 H4042

वह तेरे सिर पर शोभा की माला धरेगी और वह तुझे एक वैभव का मुकुट देगी।”

10

שְׁמַע	בְּנִי	וְקַח	אֲמָרָי	וְיִרְבּוּ	לְךָ	שְׁנוֹת	חַיִּים׃
सुन	मेरे-पुत्र	और-ग्रहण-कर	वचन-मेरे	और-बढ़ेंगे	तेरे-लिए	वर्ष	जीवन-के
H8085		H3947	H0561			H8141	

सुन, हे मेरे पुत्र। जो मैं कहता हूँ तू उसे ग्रहण कर! तू अनगिनत सालों साल जीवित रहेगा।

11

בְּדֶרֶךְ	חָכְמָה	הֹרֵתִיךָ	הִדְרַכְתִּיךָ	בְּמַעְגְּלֵי־	יֹשֶׁר׃
राह-में	बुद्धि-की	सिखाया-तुझे	चलाया-तुझे	पथों-में-	सीधाई-के
H1870	H2451		H1869	H4570	H3476

मैं तुझे बुद्धि के मार्ग की राह दिखाता हूँ, और सरल पथों पर अगुवाई करता हूँ।

12

בְּלֶכְתְּךָ	לֹא־	יֵצַר	צַעֲדֶךָ	וְאִם־	תָּרוּץ	לֹא	תִכָּשֵׁל׃
चलते-हुए-तेरे	नहीं-	संकुचित-होगी	चाल-तेरी	और-यदि-	दौड़े	नहीं	लड़खड़ाएगा
H3212	H3808	H3334	H6806		H7323	H3808	H3782

जब तू आगे बढ़ेगा तेरे चरण बाधा नहीं पायेंगे, और जब तू दौड़ेगा ठोकर नहीं खायेगा।

13

הַחֲזֵק	בַּמּוּסָר	אַל־	תֶּרֶף	נִצְּרֶהָ	כִּי־	הִיא	חַיֶּיךָ׃
पकड़-रख	शिक्षा-को	मत-	ढीला-कर	रक्षा-कर-उसकी	क्योंकि-	वह	जीवन-तेरा
H2388	H4148	H0408	H7503	H5341		H1931	

शिक्षा को थामे रह, उसे तू मत छोड़। इसकी रखवाली कर। यही तेरा जीवन है।

14

בְּאֹרַח	רְשָׁעִים	אַל־	תָּבֹא	וְאַל־	תְּאַשֵּׁר	בְּדֶרֶךְ	רָעִים׃
पथ-में	दुष्टों-के	मत-	आ	और-मत-	चल	राह-में	बुरों-की
H0734	H7563	H0408	H0935	H0408	H0833	H1870	

तू दुष्टों के पथ पर चरण मत रख या पापी जनों की राह पर मत चल।

15

פְּרָעֵהוּ	אַל־	תַּעֲבָר־	בּוֹ	שְׂטֵה	מֵעָלָיו	וַעֲבוֹר׃
छोड़-उसे	मत-	गुजर-	उसमें	मुड़-जा	उससे	और-गुजर-जा
	H0408			H7847		

तू इससे बचता रह, इसपर कदम मत बढ़ा। इससे तू मुड़ जा। तू अपनी राह चल।

16

כִּי	לֹא	יִשְׁנוּ	אִם־	לֹא	יָרֵעוּ	וְנִגְזְלָה	שְׁנָתָם	אִם־	לֹא	[יכשולו]	(יַכְשִׁילוּ׃)
क्योंकि	नहीं	सोते-हैं	यदि-	नहीं	बुराई-करें	और-छिन-जाती-है	नींद-उनकी	यदि-	नहीं	—	गिराएँ
	H3808	H3462		H3808		H1497	H8142		H3808	H3782	H3782

वे बुरे काम किये बिना सो नहीं पाते। वे नींद खो बैठते हैं जब तक किसी को नहीं गिराते।

17

כִּי	לָחֲמוּ	לֶחֶם	רֶשַׁע	וְיֵין	חֲמָסִים	יִשְׁתּוּ׃
क्योंकि	खाते-हैं	रोटी	दुष्टता-की	और-दाखरस	हिंसा-की	पीते-हैं
		H3899	H7562	H3196	H2555	H8354

वे तो बस सदा नीचता की रोटी खाते और हिंसा का दाखमधु पीते हैं।

18

וְאֹרַח	צַדִּיקִים	כְּאוֹר	נֹגַהּ	הוֹלֵךְ	וָאוֹר	עַד־	נְכוֹן	הַיּוֹם׃
और-पथ	धर्मियों-का	प्रकाश-की-तरह	चमकती-हुई	जानेवाली	और-प्रकाशमान	जब-तक-	स्थिर	दिन
H0734	H6662	H0216	H5051	H1980	H0215	H5704		H3117

किन्तु धर्मी का पथ वैसा होता है जैसी प्रात: किरण होती है। जो दिन की परिपूर्णता तक अपने प्रकाश में बढ़ती ही चली जाती है।

19

דֶּרֶךְ	רְשָׁעִים	כָּאֲפֵלָה	לֹא	יָדְעוּ	בַּמֶּה	יִכָּשֵׁלוּ׃	פ
राह	दुष्टों-की	अंधेरे-की-तरह	नहीं	जानते	किसमें	लड़खड़ाते-हैं	—
H1870	H7563	H0653	H3808	H3045	H4100	H3782	

किन्तु पापी का मार्ग सघन, अन्धकार जैसा होता है। वे नहीं जान पाते कि किससे टकराते हैं।

20 בְּנִי לְדְבָרַי הַקְשִׁיבָה לַאֲמָרַי הַט־ אָזְנֶךָ׃
मेरे-पुत्र वचनों-मेरे-की-ओर ध्यान-दे कथनों-मेरी-की-ओर झुका- कान-अपना
H1697 H7181 H0561 H5186 H0241

हे मेरे पुत्र, जो कुछ मैं कहता हूँ उस पर ध्यान दे। मेरे वचनों को तू कान लगा कर सुन।

21 אַל־ יַלִּיזוּ מֵעֵינֶיךָ שָׁמְרֵם בְּתוֹךְ לִבֶּךָ׃
मत- भटकें आँखों-तेरी-से रख-उन्हें बीच-में हृदय-तेरे-के
H0408 H3868 H8104 H8432 H3824

उन्हें अपनी दृष्टि से ओझल मत होने दे। अपने हृदय पर तू उन्हें धरे रह।

22 כִּי־ חַיִּים הֵם לְמֹצְאֵיהֶם וּלְכָל־ בְּשָׂרוֹ מַרְפֵּא׃
क्योंकि- जीवन वे पानेवालों-उनके-लिए और-सब- शरीर-उसके-को चंगाई
H3605 H1992 H4672 H3605 H1320 H4832

क्योंकि जो उन्हें पाते हैं उनके लिये वे जीवन बन जाते हैं और वे एक पुरुष की समपूर्ण काया का स्वास्थ्य बनते हैं।

23 מִכָּל־ מִשְׁמָר נְצֹר לִבֶּךָ כִּי־ מִמֶּנּוּ תּוֹצְאוֹת חַיִּים׃
सब-से- पहरेदारी रक्षा-कर हृदय-अपने-की क्योंकि- उससे निकलते-हैं जीवन-के
H3605 H4929 H5341 H3824 H8444

सबसे बड़ी बात यह है कि तू अपने विचारों के बारे में सावधान रह। क्योंकि तेरे विचार जीवन को नियंत्रण में रखते हैं।

24 הָסֵר מִמְּךָ עִקְּשׁוּת פֶּה וּלְזוּת שְׂפָתַיִם הַרְחֵק מִמֶּךָּ׃
दूर-कर अपने-से टेढ़ापन मुख-का और-कुटिलता होंठों-की दूर-रख अपने-से
H5493 H6143 H6310 H3891 H8193 H7368 H4480

तू अपने मुख से कुटिलता को दूर रख। तू अपने होठों से भ्रष्ट बात दूर रख।

25 עֵינֶיךָ לְנֹכַח יַבִּיטוּ וְעַפְעַפֶּיךָ יַיְשִׁרוּ נֶגְדֶּךָ׃
आँखें-तेरी सीधे-सामने देखें और-पलकें-तेरी सीधा-देखें सामने-तेरे
H5227 H5027 H6079 H3474 H5048

तेरी आँखों के आगे सदा सीधा मार्ग रहे और तेरी चकचकी आगे ही लगी रहें।

26 פַּלֵּס מַעְגַּל רַגְלֶךָ וְכָל־ דְּרָכֶיךָ יִכֹּנוּ׃
समतल-कर पथ पाँव-तेरे-का और-सब- राहें-तेरी स्थिर-होंगी
H6424 H4570 H7272 H3605 H1870

अपने पैरों के लिये तू सीधा मार्ग बना। बस तू उन राहों पर चल जो निश्चित सुरक्षित हैं।

27 אַל־ תֵּט יָמִין וּשְׂמֹאול הָסֵר רַגְלְךָ מֵרָע׃
मत- मुड़- दाहिने और-बाएँ दूर-कर पाँव-अपना बुराई-से
H0408 H5186 H3225 H8040 H5493 H7272

दाहिने को अथवा बायें को मत डिग। तू अपने चरणों को बुराई से रोके रह।